सीमा शुक्ला ओझा
seema.ojha@gmail.com

इतिहास में पुरातत्व का महत्व और उपयोग

इतिहास अतीत की घटनाओं, गतिविधियों, स्थितियों और प्रक्रियाओं का एक रिकॉर्ड है। एक विषय के रूप में, यह न केवल यह समझने में छात्रों की मदद करता है कि वे कौन हैं और कहां से आए हैं, बल्कि यह उन्हें वर्तमान मुद्दों और भविष्य के बारे में सोच-समझकर निर्णय लेने का अवसर भी प्रदान करता है। इसके साथ ही इतिहास ज़िम्मेदारी पूर्ण नागरिकता सिखाने के साथ ही विद्यार्थियों में कई तरह के कौशल का भी विकास करता है। इतिहासकारों का मानना है कि इतिहास का अध्ययन एक व्यक्ति को मानवीय अनुभव की सार्वभौमिकता के साथ-साथ उन विशिष्टताओं के प्रति भी संवेदनशील बनाता है जो संस्कृतियों और समाजों को एक दूसरे से अलग करते हैं (डेनियल, 1981; वॉस, 1998)। सामाजिक विज्ञान के एक विषय के रूप में, इतिहास, इस प्रकार, प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों के आधार पर इतिहासकारों द्वारा तैयार किए गए मानव अनुभवों के बहुपक्षीय विवरणों का लेखा जोखा है।

यह सभी मानते हैं कि वास्तविक साक्ष्य/प्राथमिक स्रोत का उपयोग इतिहास-शिक्षण का एक महत्वपूर्ण मानदंड है। दुनिया के कई हिस्सों की कक्षाओं में पहले से ही स्कूल में पाठ्यपुस्तकों का उपयोग करने के बजाय प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग करने पर ज़ोर दिया जाने लगा है। इसने इतिहास शिक्षण को अधिक उपयोगी और आनंदमय बना दिया है। पुरातात्विक अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत हैं। लोगों के अतीत को समझने के लिए पुरातात्विक साक्ष्यों का उपयोग शिक्षार्थियों के मानसिक क्षितिज को व्यापक बनाता है और उन्हें विभिन्न जीवनशैलियों की वैधता और व्यवहार्यता से परिचित कराता है (फेडोराक, 1994, पृष्ठ 26)। पुरातात्विक अवशेष न केवल कुलीन लोगों के जीवन पर प्रकाश डालते हैं, बल्कि आम लोगों की कहानियों और उनके दैनिक कारनामों को भी प्रस्तुत करते हैं।

आज यह देखा जा रहा है कि ऐतिहासिक विरासतें लुप्तप्राय हो रही हैं। लोगों द्वारा कई बार जानबूझकर अथवा कई बार लापरवाही से संग्रह करने के कारण ऐतिहासिक स्थल अलग-अलग तरीकों से नष्ट हो रहे हैं। अधिकांश लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि किसी ऐतिहासिक स्थल की सतह पर मिला एक बर्तन का टुकड़ा भी ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है। हो सकता है कि यह टुकड़ा उस स्थान पर रहने वाले लोगों के बारे में जानकारी का एकमात्र साक्ष्य हो। ऐसे में यदि लापरवाही से साक्ष्य को एकत्र किया गया तो उसमें निहित ऐतिहासिक ज्ञान हमेशा के लिए खो सकता है। यह एक सामान्य समझ की बात है कि जब अधिक से अधिक लोग पुरातत्वविदों और उनके काम के बारे में 'जागरूक' होंगे, तो वे अधिक से अधिक सांस्कृतिक विरासत के प्रति सराहनीय रवैया रखेंगे, और इस तरह हम अधिक से अधिक स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों और वस्तुओं को विनाश या लूट से बचा पाएंगे। पीटर स्टोन ने ठीक ही कहा है कि, ''भौतिक विरासत का दुरुपयोग पूरी तरह से कानून द्वारा नहीं रोका जा सकता है, यह काम केवल शिक्षा के माध्यम से आम जनता के जागरूकता के स्तर को बढ़ाकर ही किया जा सकता है। आज की जनता पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाले उनके बच्चे हैं, जो कल की आम जनता का निर्माण करेंगे''(कॉर्बिशले, 2011, पृ. 84-85)।

इतिहास की कक्षाओं में पुरातत्व का महत्व और उपयोग

युवा छात्र अक्सर समय और इतिहास की अवधारणाओं को समझने में कठिनाई का सामना करते हैं। फेडोरक ने एडम (1994,पृ. 26) को उद्धृत करते हुए लिखा है जो यह प्रस्तावित करते हैं कि इस तरह की समस्या से निपटने के लिए अतीत में लोग कब रहते थे से ज़्यादा ज़ोर इस बात पर देना होगा कि अतीत में लोग कैसे रहते थे। भौतिक सामग्री या पुरातात्विक अवशेषों का उपयोग छात्रों को ठोस सबूत देता है जो उन्हें समय की अवधारणा (फेडोरक में किस्कोक द्वारा, 1994, पृ.26) को समझने में मदद करता है। पुरातात्विक साक्ष्य छात्रों को बदलाव की अवधारणा को समझने के लिए भी आदर्श माना जाता है क्योंकि अतीत की उन कलाकृतियों को देखने से उनमें समय के साथ जो परिवर्तन दिखता है उससे छात्रों के लिए यह समझना आसान हो जाता है कि समय के साथ परिवर्तन कैसे होते हैं (वही, पृ.26) हेंसन, बोडले और हेवर्थ (2006, पृ.36) का कहना है कि "पुरातात्विक साक्ष्य का उपयोग करते हुए इतिहास पढ़ाने से स्कूलों में इतिहास के कई सकारात्मक शैक्षिक लाभ दिखते हैं। पुरातत्व एक अनुभव आधारित विषय है। कलाकृतियों और स्मारकों की जांच करने से छात्रों को अतीत की भौतिक सामग्री से

ऐसा जुड़ाव हो जाता है जिसे आसानी से अकेले दस्तावेज़ों के ज़रिये नहीं पाया जा सकता है।"

कक्षा में पुरातत्व के उपयोग पर कई प्रकाशित शोध हैं। 2003 में, लेवस्तिक, हेंडरसन और शाल्ब ने अपने लेख 'डिगिंग फॉर क्लूज़: एन आर्कियोलॉजिकल एक्सप्लोरेशन ऑफ़ हिस्टोरिकल कॉग्निशन' में छात्रों के सीखने पर पुरातात्विक शिक्षा के प्रभावों की जांच की है। उनका निष्कर्ष था कि पुरातत्व शिक्षा इकाइयां इतिहास और पुरातत्व को सीखने में योगदान करने के साथ ही पुरातात्विक नैतिकता के प्रति सम्मान व्यक्त करने में भी योगदान देती हैं। 2003 में डॉ मैरी डर्बिश ने अपनी कक्षा में छात्रों पर पुरातात्विक इकाइयों के प्रभावों की जांच की। उनके शोध के परिणामों में पुरातत्व के लिए एक बढ़ी हुई जानकारी और प्रशंसा मिली, लेकिन पुरातात्विक नैतिकता के बारे में छात्र जागरूकता या चिंता में थोड़ी ही वृद्धि देखने को मिली (डर्बिश 2003, पृ. 108)। सोसाइटी फ़ॉर अमेरिकन आर्कियोलॉजी (SAA) ने अपने अध्ययन में 'आर्कियोलॉजी के बारे में सार्वजनिक धारणाओं और दृष्टिकोणों के बारे में' शीर्षक से एक पुस्तिका निकाली। इस पुस्तिका के निष्कर्ष में कहा गया है कि "पुरातत्व और पुरातत्वविदों के बारे में अमेरिकी जनता का ज्ञान न तो ठोस है और न ही स्पष्ट है और इसके साथ ही इस अध्ययन क्षेत्र को लेकर कई बार उनमें ग़लत धारणाएं भी हैं" (रामोस और डुगानेन 2000, पृ. 30)। इस तरह के अध्ययनों से संकेत मिलता है कि प्रारंभिक पुरातत्व शिक्षा की कितनी आवश्यकता है। SAA ने कहा कि "पुरातत्व छात्रों को अवलोकन, व्याख्या, निष्कर्ष निकलने की क्षमता, अनुमान, और वर्गीकरण जैसे महत्वपूर्ण कौशल का उपयोग करने और विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। यह गणित (जैसे ग्रिड के साथ काम करना), विज्ञान (जैसे, स्तरविज्ञान का अध्ययन करना), भाषा कला (जैसे नोट्स लेना), और कला (जैसे, वस्तुओं का चित्र बनाना) में छात्रों के कौशल को भी बढ़ाता है " (सोसाइटी फॉर अमेरिकन आर्कियोलॉजी, 1995, पृ.1)।

मैट ग्लेंडिनिंग (2005) ने अपने लेख 'डिगिंग इन टू हिस्ट्री: ऑथेंटिक लर्निंग थ्रू आर्किओलोजी 'में यह निष्कर्ष निकाला कि पुरातत्व, इतिहास-सहयोगात्मक, बहुआयामी, अनुभवात्मक, मज़े दार और अतीत को पढ़ने का सबसे प्रभावशाली तरीका है। पुरातात्विक और ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग अब इतिहास के शिक्षकों द्वारा कई देशों में अपने विषय को पढ़ाने के तरीके में प्रमुखता से शामिल है। कई देशों में कई पुरातात्विक संगठन और संग्रहालय शिक्षकों को पुरातत्व और स्कूलों में सीखने के साक्ष्य को अध्ययन में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए काम कर रहे हैं (कॉर्बिशले, 2011, पृ. 83-84, 94)। कई स्थानों पर शिक्षकों के लिए कई तरह की कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है, जैसे उटाह में आयोजित 'आर्किओलोजी, एथिक्स एंड कैरेक्टर ' कार्यशाला जिसके द्वारा पुरातत्व को कक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाने का प्रयास किया गया (मो एट अल 2002, पृ.112)। शोध से पता चलता है कि पठन-पाठन में इमारतों और स्थानीय स्थानों का उपयोग करने के प्रति काफ़ी जागरूकता और उत्साह दिखता है और यह भी कि इस तरह के शिक्षण से अंतर्विषयी कार्य के भरपूर अवसर मिलते हैं (कॉर्बिशले, 2011, पृ. 9)। कई विश्वविद्यालय भी पुरातत्व विज्ञान में शिक्षक पाठ्यक्रम प्रदान कर रहे हैं।

भारतीय स्कूल पाठ्यक्रम के ढांचे में पुरातत्व

भारत में स्कूली शिक्षा से संबंधित व्यापक दिशा-निर्देश केन्द्र सरकार द्वारा तैयार किए जाते हैं। इन दिशा निर्देशों को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा पाठ्यक्रम के ढांचे के रूप में और विस्तार दिया जाता है। अब तक एनसीईआरटी द्वारा चार पाठ्यचर्या की रूपरेखाएं तैयार की गई हैं। ये रूपरेखाएं सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में पुरातत्व पर बात करती है (जिसमें पुरातत्व और जीवित विरासत दोनों शामिल हैं)। पाठ्यक्रम की सिफ़ारिशों को आगे विभिन्न चरणों में पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से पेश किया जाता है।

भारत में परिषद द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को आमतौर पर राज्यों और अन्य स्कूल प्रबंधनों द्वारा ज्यों का त्यों अथवा कुछ स्थानीय सुधारों के साथ अपनाया जाता है, हालांकि, शिक्षा समवर्ती सूची के अंतर्गत आती है, इसलिए कई राज्य अपना स्वयं का पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें भी तैयार करते हैं।

परिषद में पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की शुरुआत से ही, पुरातात्विक साक्ष्यों को इतिहास के पाठ्यक्रम में एकीकृत तरीके से प्रस्तुत किया जाता रहा है। 2005 से पहले, इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न लोगों के जीवन और गतिविधियों का वर्णन करने वाली सामग्री के साथ ही उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं, पुरास्थलों और नक्शों की तस्वीरें और चित्र शामिल थे। लेकिन इस तरह के चित्र बहुत कम थे और ये सबूत के रूप में कम सजावट के उद्देश्य से अधिक उपयोग में लाये गए थे। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में साक्ष्यों के इस्तेमाल हेतु बहुत लम्बा इंतज़ार पड़ा। 2005 में सर्वप्रथम पाठ्यपुस्तकों में तरह-तरह के लिखित तथा चित्र साक्ष्यों का प्रयोग किया गया जहाँ सभी चित्रों के साथ विस्तृत टिप्पणियां, तरह-तरह की गतिविधियाँ, प्रश्न तथा पुरातात्विक और अन्य ऐतिहासिक साक्ष्यों पर चर्चाएं शामिल की गई थीं।

भारत में स्कूली शिक्षा में 2005 में नए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF, 2005) की शुरुआत के साथ महत्वपूर्ण बदलाव आए जिसने बाल-केंद्रित शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करने पर ज़ो र दिया; गतिविधि-आधारित सीखने को बढ़ावा देने की बात की। NCF 2005 के बाद तैयार इतिहास का पाठ्यक्रम वास्तव में पिछले पाठ्यक्रमों से काफी अलग है। इतिहास की पाठ्यपुस्तकें अब साक्ष्य आधारित इतिहास प्रस्तुत करती हैं। पाठ्यपुस्तकों में साक्ष्य को अक्सर लेखकों द्वारा 'स्रोतों या चित्रों' के रूप में उल्लिखित किया गया है और अब छात्रों के सामने विविध प्रकार के दस्तावेज़ों, उद्धरणों और इमारतों और वस्तुओं की तस्वीरों को प्रस्तुत कर उन्हें पूछताछ के द्वारा अपने

स्वयं के निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। विस्तृत टिप्पणियों के साथ तस्वीरें और चित्र, योजनाएं और कलाकारों के छापे जैसे पुरातात्विक और ऐतिहासिक साक्ष्यों का उपयोग, अब इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का एक अभिन्न अंग है। अब इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रण के लिए एक अलग तरह का दृष्टिकोण अपनाया गया है। वे अब केवल पाठ की एकरसता को नहीं तोड़ते हैं या पुस्तक को अधिक आकर्षक बनाने का प्रयास नहीं करते हैं। अब छात्रों को केवल इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि विविध साक्ष्यों के ज़रिये इतिहास को करके सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्हें प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों को देखकर मानव अतीत के बारे में सीखना है, जैसाकि इतिहासकार अतीत की कहानी-इतिहास के बारे में बताते समय करते हैं।

इसलिए पुरातात्विक साक्ष्य बहुत शुरुआत से ही इतिहास के पाठ्यक्रम का हिस्सा थे, लेकिन पहले इन्हें इस तरह से दिया गया था कि शिक्षक ख़ुद अक्सर नहीं जानते थे कि यह पाठ्यक्रम में दिया गया था जिसे उन्हें पढ़ाने की आवश्यकता थी। NCF 2005 के बाद इतिहास की पाठ्यपुस्तकों की जो एक नई विशेषता हम सबके सामने आई, वह इतिहास के विद्यार्थियों का उन स्रोतों से परिचय है, जो छात्रों को उनका अध्ययन करने, उन पर सोचने और स्वयं निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता और औचित्य

आज पूरी दुनिया के पुरातत्वविद पुरातत्व विज्ञान के बारे में छात्रों और जनता के साथ जानकारी साझा करने का प्रयास कर रहे हैं ताकि पुरातात्विक संसाधनों की रक्षा और पहचान में उनका समर्थन प्राप्त किया जा सके। अतः यह समझना ज़रूरी है कि इन महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में हमारे विद्यार्थियों के विचार और अनुभव क्या हैं। विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में और छात्रों के साथ बातचीत में यह पता चला है कि छात्र पुरातत्व के बारे में बहुत उत्सुक हैं लेकिन अध्ययन के इस क्षेत्र बारे में उनके पास पर्याप्त जानकारी नहीं है। भारत में छात्रों की ऐतिहासिक सोच पर पुरातत्व के उपयोग और प्रभाव की जांच करने वाले शोध नहीं मिलते हैं। हालांकि सामान्य रूप से इतिहास शिक्षण की जांच के लिए कुछ प्रयास किए गए हैं। रैना (1992) ने राजस्थान में इतिहास शिक्षण का एक सर्वेक्षण किया। दहिया (1994) ने माध्यमिक छात्रों को प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास पढ़ाने में पुरातत्व के महत्व पर हरियाणा और दिल्ली में सीबीएसई से संबद्ध स्कूलों के शिक्षकों का एक सर्वेक्षण किया। सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (एन सी ई आर टी, 2004) ने सामाजिक विज्ञान, भाषा और वाणिज्य की पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन अध्ययन किया, लेकिन कहीं भी पुरातत्व के बारे में विविध बोर्डों की पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध जानकारी का विश्लेषण यह जानने के लिए नहीं किया गया कि अमुक सामग्री छात्रों के ऐतिहासिक ज्ञान पर क्या प्रभाव डालती है अथवा उन्हें सांस्कृतिक विरासत के प्रति संवेदनशील बनाती है या नहीं।

शोध प्रश्न

अध्ययन निम्नलिखित सवालों के जवाब देने का प्रयास करता है:

1. क्या विभिन्न बोर्डों का इतिहास पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें पुरातत्व के बारे में छात्रों की समझ विकसित करती हैं।
2. क्या विभिन्न बोर्डों का इतिहास पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देती हैं।

पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा

अध्ययन के लिए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE)*, भारतीय स्कूल प्रमाण पत्र परीक्षा परिषद (CISCE) और उत्तर प्रदेश बोर्ड ऑफ़ हाई स्कूल और इंटरमीडिएट एजुकेशन (यूपी बोर्ड)** से संबद्ध स्कूलों में इस्तेमाल किये जाने वाले ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के इतिहास के पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा की गई। उच्च माध्यमिक स्तर पर इन बोर्डों के इतिहास पाठ्यक्रम की समीक्षा यह जानने के लिए की गई कि इन बोर्डों में इतिहास को पढ़ाने के औचित्य और उद्देश्यों का पता लगाया जा सके और साथ ही यह भी जाना जा सके कि इनमें पुरातात्विक सामग्री को कितना और किस तरह दिया गया है और इस सम्बन्ध में कैसी गतिविधियां दी गई हैं। इतिहास की पाठ्यपुस्तकों की सामग्री, प्रश्नों / अभ्यासों और चित्रों के संदर्भ में समीक्षा की गई कि कैसे इन पाठ्यपुस्तकों की पुरातात्विक सामग्रियां इतिहास की बेहतर समझ और छात्रों के बीच पुरातत्व की बुनियादी समझ में योगदान करती हैं और कैसे ये पाठ्यपुस्तकें छात्र-छात्राओं को सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए संवेदनशील बनाती हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि दसवीं कक्षा तक इतिहास सामाजिक विज्ञान का हिस्सा है और कक्षा XI-XII में यह एक वैकल्पिक विषय के रूप में उपलब्ध है। सीबीएसई से जुड़े स्कूल NCERT द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का अनुसरण करते हैं, जबकि अन्य दो बोर्ड सिर्फ पाठ्यक्रम तैयार करते हैं और संबद्ध स्कूलों को निजी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों में चुनाव का विकल्प देते हैं। CISCE और UP के विपरीत, NCERT पाठ्यक्रम विषय के औचित्य, इसे पढ़ाने के उद्देश्य के साथ-साथ विभिन्न प्रकरणों (topic) के उद्देश्यों पर भी प्रकाश डालता है। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा से पता चलता है कि सीबीएसई और यूपी बोर्ड उच्च माध्यमिक स्तर पर प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारतीय इतिहास पढ़ाते हैं, जबकि CISCE बोर्ड इस समय अवधि के बारे में कक्षा IX-X में पढ़ाता है। इसलिए तुलनात्मक विश्लेषण के लिए हमने CISCE बोर्ड की कक्षा IX -X के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की, जो प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक भारतीय इतिहास की चर्चा करते हैं के साथ-साथ इनके

कक्षा XI-XII के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की भी समीक्षा की है जो आधुनिक भारतीय और विश्व इतिहास से संबंधित हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर पर इन बोर्डों में इतिहास शिक्षण के औचित्य, इसे पढ़ाने के उद्देश्य और इसमें पुरातत्व संबंधी सामग्री और गतिविधियों के प्रस्तुतीकरण का पता लगाने के लिए इनके इतिहास के पाठ्यक्रम की समीक्षा की गई।

एनसीईआरटी पाठ्यक्रम का पहला उद्देश्य विषय के साथ छात्रों की रचनात्मक सहभागिता को बढ़ावा देना है। इसलिए, पाठ्यक्रम को इस तरह से तैयार किया गया है कि यह छात्रों में एक ऐतिहासिक संवेदनशीलता विकसित करने में मदद करता है और साथ ही इतिहास के महत्व के बारे में उन्हें जागरूक करता है। पाठ्यक्रम का दूसरा उद्देश्य छात्रों पर भार को कम करना है। ऐसा कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों और घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करके किया गया है। भार में कमी के लक्ष्य को प्राप्त करके, इसके तीसरे उद्देश्य के रूप में पाठ्यक्रम की अपेक्षा है कि यह शिक्षकों को इतिहास के विविध प्रकरणों को गहराई से जानने हेतु पर्याप्त समय प्रदान करेगा। चौथा, पाठ्यक्रम ने अन्य प्रकरणों के साथ ही हाशिये पर रह रहे लोगों व लैंगिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर ऐतिहासिक पूछताछ / अध्ययन के दायरे को व्यापक बनाने का प्रयास किया है। पाँचवें, अंतःविषय की पाठ्यचर्या संबंधी चिंताओं को संबोधित करते हुए यह पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों के बीच के संपर्क को भी प्रदर्शित करता है और इस तरह यह पाठ्यक्रम इतिहास के विचार को व्यापक बनाने में मदद करता है।

कक्षा XI और XII में, पाठ्यक्रम ने समय और स्थान पर फैले विषयों की ऐतिहासिक समझ को विकसित करने और बढ़ावा देने के लिए एक मुद्दा आधारित दृष्टिकोण (thematic approach) अपनाया है। इसलिए, छात्रों को इस विचार से परिचित कराने का ध्यान रखा गया है कि ऐतिहासिक ज्ञान बहस के माध्यम से विकसित होता है और साक्ष्यों को ध्यान से पढ़ना और व्याख्या करना आवश्यक है।

बारहवीं कक्षा में, पाठ्यक्रम विद्यार्थियों का परिचय प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक भारतीय इतिहास के कुछ मुख्य प्रकरणों से करता है जो छात्रों को प्रत्येक विषय के बारे में अधिक विस्तार और गहराई से जानने का अवसर देता है। कक्षा बारहवीं के पाठ्यक्रम को इस तरह से तैयार किया गया है कि प्रत्येक अध्याय एक विशेष प्रकार के स्रोत का अन्वेषण हो जाता है: पुरातात्विक अवशेष, शिलालेख, महाकाव्य, काल क्रम, धार्मिक ग्रंथ, यात्रा विवरण, सरकारी रिपोर्ट, राजस्व मैनुअल, पुलिस रिकॉर्ड, समाचार पत्र, भवन, चित्र, विज्ञापन, मौखिक स्रोत।

CISCE पाठ्यक्रम इतिहास पढ़ाने के पीछे विस्तृत तर्क या उद्देश्य प्रदान नहीं करता है। माध्यमिक स्तर पर इसके पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय ऐतिहासिक विकास के उन पहलुओं की समझ से परिचित कराना है जो समकालीन भारत की समझ के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों में विभिन्न धाराओं की एक वांछनीय समझ को जागृत करना है जिन्होंने भारतीय राष्ट्र और इसकी सभ्यता और संस्कृति के विकास में योगदान दिया है। मानव जाति की कुल विरासत के लिए विभिन्न संस्कृतियों द्वारा किए गए योगदान के प्रति एक वैश्विक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य विकसित करना भी इसका एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को अध्ययन अवधि की महत्वपूर्ण घटनाओं और व्यक्तित्वों का क्रमानुसार और संदर्भ के साथ ज्ञान प्रदान करना है, तथ्यात्मक सबूतों से परिचित कराना है, जिसके आधार पर उस काल अवधि के बारे में स्पष्टीकरण या निर्णय स्थापित किए जाने चाहिए। इसके साथ ही समस्याओं के अस्तित्व और व्याख्या के साक्ष्य की प्रासंगिकता, तथ्यों को इकट्ठा करने की क्षमता का विकास करना, साक्ष्य का मूल्यांकन करना और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मुद्दों पर चर्चा करना, नए साक्ष्य के प्रकाश में ऐतिहासिक विचारों को पढ़ने या साक्ष्य की नई व्याख्या करने की क्षमता विकसित करना, ऐतिहासिक निरंतरता की भावना को बढ़ावा देना, पूर्वाग्रहों को कम करने और विश्व इतिहास के लिए एक अधिक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने के लिए, विषय की सही शब्दावली का उपयोग करके विचारों और तर्कों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना, और विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक साक्ष्यों से परिचित कराना और उनके मूल्यांकन में आने वाली समस्याओं के बारे में जागरूक कराना आदि इसके कुछ अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं।

माध्यमिक स्तर पर कक्षा IX के पाठ्यक्रम में हड़प्पा सभ्यता से लेकर गुप्त काल, दक्षिण भारत का मध्यकालीन भारतीय इतिहास, दिल्ली सल्तनत, मुगल इतिहास और विश्व इतिहास की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं अर्थात् पुनर्जागरण और औद्योगिक क्रांति शामिल हैं। दसवीं कक्षा का पाठ्यक्रम मुख्यतः 1857 से 1947 तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और विश्व इतिहास से संबंधित कुछ विषयों से संबंधित है। अगर हम ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के पाठ्यक्रम की बात करते हैं, तो इसमें राष्ट्रवाद का इतिहास (स्वदेशी आंदोलन से सविनय अवज्ञा तक) और विश्व इतिहास के कुछ विषय शामिल हैं। हालांकि पाठ्यक्रम में छात्रों में ऐतिहासिक संवेदनशीलता विकसित करने के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है, लेकिन विषयों और उप-विषयों को सूचीबद्ध करते समय इसमें विभिन्न प्रकार के स्रोतों का उल्लेख है। हर अध्याय में साहित्यिक, पुरातात्विक साक्ष्य शीर्षक से जानकारी दी गई है। यह इंगित करता है कि पाठ्यक्रम निर्माता छात्रों को विभिन्न स्रोतों की बुनियादी समझ प्रदान करना महत्वपूर्ण समझते हैं। कक्षा XI-XII के लिए पाठ्यक्रम हालांकि विषयों और उप-विषयों के रूप में है, लेकिन शुरुआत में यह न केवल ज्ञान पक्ष पर ध्यान केंद्रित करता है, बल्कि पाठ्यक्रम के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में स्रोतों पर काम करने के माध्यम से विभिन्न क्षमताओं के विकास पर भी ध्यान दिलाता है।

हमने अध्ययन के लिए एक राज्य बोर्ड उत्तर प्रदेश लिया है। उत्तर प्रदेश में कुछ माध्यमिक स्कूल CISCE और CBSE बोर्ड से संबद्ध हैं, लेकिन अधिकांश माध्यमिक विद्यालय उत्तर प्रदेश बोर्ड से संबद्ध हैं। कक्षा आठवीं तक पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें शासन द्वारा तैयार करवाये जाते रहे हैं, लेकिन कक्षा IX के बाद स्कूल राज्य द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर विभिन्न लेखकों द्वारा लिखित पाठ्य पुस्तकों का चयन करने के लिए स्वतंत्र हैं। इस स्तर पर इतिहास पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं- भारतीय इतिहास को विश्व इतिहास के संदर्भ में देखना, छात्र-छात्राओं का मूल्यांकन करते समय उनकी मौलिकता पर ध्यान केंद्रित करना, छात्रों को नवीनतम शोध से समझ हासिल करने के लिए प्रेरित करना। ऐतिहासिक यात्राओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए, पाठ्यक्रम शैक्षिक यात्रा को अनिवार्य बनाने और छात्रों को वर्ष में कम से कम एक बार इस तरह की यात्रा पर ले जाने का सुझाव देता है। पाठ्यक्रम यह स्पष्ट करता है कि इतिहास का अध्ययन पूरे राष्ट्र के अतीत पर आधारित होना चाहिए ताकि छात्र अपने पूर्वजों की संस्कृति, उनकी उपलब्धियों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकें, उनसे प्रेरणा ले सकें और ग़लतियों को दोहराने से बच सकें। इसका उद्देश्य छात्रों को उन तथ्यों से अवगत कराना है, जिन्होंने राष्ट्रवाद की भावनाओं को विकसित करने में मदद की और उन कमियों को भी समझने में मदद करना है जिन्होंने ऐसी भावनाओं के विकास में बाधाएं उत्पन्न कीं ताकि वे स्वयं इन ग़लतियों को न दोहराएं। पाठ्यक्रम अपने उद्देश्य के रूप में छात्रों में सार्वभौमिक भाईचारे, मानवतावादी और यथार्थवादी दृष्टिकोण की भावनाओं को विकसित करना चाहता है। यह अपने अतीत के आधार पर वर्तमान की समझ बनाने का सुझाव देता है और अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम और हमारे राष्ट्र पर इसके प्रभाव को समझने का सुझाव देता है। इतिहास को रोचक बनाने के लिए जहाँ भी संभव हो मानचित्र और अन्य चित्रों के उपयोग करने का भी प्रस्ताव करता है।

कक्षा XI में इतिहास का पाठ्यक्रम इतिहास के स्रोतों पर केंद्रित है, जिसमें प्रागितिहास से लेकर गुप्त वंश तक प्राचीन भारतीय अतीत और मध्ययुगीन इतिहास में सल्तनत से सूफ़ी संतों तक और कक्षा XII में भारतीय इतिहास में मुगलों से 1947 में भारत की स्वतंत्रता तक के इतिहास को जगह मिली है। पाठ्यक्रम केवल प्रकरणों और उपप्रकरणों के रूप में है। इस पाठ्यक्रम में इतिहासकार के शिल्प के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है कि कैसे छात्र विभिन्न स्रोतों का प्रयोग करेंगें और इस विषय से जुड़े कौशल को हासिल करेंगें।

CISCE और UP के विपरीत, एनसीईआरटी पाठ्यक्रम न केवल शुरुआत में विषय के औचित्य और इसे पढ़ाने के उद्देश्य पर प्रकाश डालता है, बल्कि सभी प्रकरणों के साथ भी उद्देश्य का उल्लेख करता है। यूपी और आईसीएसई पाठ्यक्रम दोनों ऐतिहासिक यात्राओं को महत्व देते हैं। यूपी इसे कुछ हद तक अनिवार्य करने का सुझाव देता है, जबकि ICSE इसे IX, XI और XII के लिए सुझाये गए कई परियोजना कार्यों में से एक के रूप में रखता है।

विभिन्न बोर्डों की पाठ्य पुस्तकों की तुलना

विभिन्न बोर्डों की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों की पाठ्य सामग्री, चित्रों और अभ्यास की तुलना द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि ये पाठ्यपुस्तकें पुरातात्विक सामग्री को कितना तथा किस तरह प्रस्तुत करती हैं. इसके साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि इनकी पाठ्य सामग्री, अभ्यास व गतिविधियाँ विद्यार्थियों को पुरातात्विक सामग्री अथवा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु किस हद तक प्रेरित करती हैं। पाठ्यपुस्तकों की तुलना करते हुए, अन्वेषक ने पुरातत्व का व्यापक संभव दृष्टिकोण लिया, जिसमें हमारी धरती पर रहने वाले सभी लोगों के संपूर्ण इतिहास से जुड़े आरंभिक समय से लेकर वर्तमान समय तक के सभी भौतिक साक्ष्य शामिल हैं।

पाठ्यसामग्री

NCERT की पाठ्यपुस्तकें उन उद्देश्यों को प्राप्त करते हुए दिखती हैं, जिन्हें प्राप्त करना पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया था। ये पाठ्यपुस्तकें अतीत को समझने के लिए विभिन्न प्रकार के स्रोतों पर बहुत अधिक ज़ोर देते हुए विषयगत दृष्टिकोण (thematic approach) पर आधारित हैं। पुरातात्विक स्रोत इनमें से एक हैं। ये पाठ्यपुस्तकें न केवल पुरातत्व पर सामग्री प्रदान करती हैं बल्कि पूरी सामग्री को पुरातात्विक सामग्री के साथ जोड़ कर प्रस्तुत करती हैं। पाठ्यपुस्तक केवल उस दौरान के प्रारंभिक मानव समाजों, प्राचीन सभ्यताओं, प्रारंभिक शहरों, राज्यों, साम्राज्यों, राजवंशों, शासकों, अर्थव्यवस्था, धर्म, कला-वास्तुकला और समाजों के विकास के बारे में ही जानकारी प्रदान नहीं करती हैं, बल्कि ऐसा वे बड़े दिलचस्प रूप से उन प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से करती हैं जिससे हमें इन समयावधियों के बारे में पता चलता है। पुरातत्वविदों द्वारा किए गए पुरातात्विक कार्य और विभिन्न पुरातात्विक स्थलों पर चर्चा विभिन्न अध्यायों का महत्वपूर्ण पहलू हैं। इसके अलावा, इन पाठ्यपुस्तकों में पुरातत्व से संबंधित विभिन्न शब्दों की व्याख्या भी की गई है, जैसे कि वनस्पति शास्त्री, पुरातत्व विज्ञानी, उत्खनन, पुरातत्व, पुरातात्विक साक्ष्य, सिक्के, मुहरें आदि।

इतिहास में कक्षा XI की पाठ्यपुस्तक 'विश्व इतिहास के कुछ विषय' प्राचीन मेसोपोटामिया, अफ्रीका, इराक, रोमन साम्राज्य, मध्य पूर्व क्षेत्रों, यूरोप, उत्तरी अमेरिका और कई अन्य जैसे दुनिया के शुरुआती प्राचीन समाजों के बारे में बताती है। कक्षा XII की पाठ्यपुस्तक 'भारतीय इतिहास के कुछ विषय' के तीन भाग हैं जिनमें क्रमशः भारतीय इतिहास के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक कालखंडों के बारे में बताया गया है।

CISCE बोर्ड अपनी ओर से किसी भी पाठ्यपुस्तक को निर्धारित नहीं करता है और इस संबंध में स्कूलों को स्वयं पुस्तकों के चयन की स्वतंत्रता देता है। जांचकर्ता ने पाया कि CISCE स्कूलों में पियरसन द्वारा प्रकाशित 'लॉन्गमैन हिस्ट्री एंड सिविक्स' कक्षा IX-X के

लिए इस्तेमाल होने वाली सबसे लोकप्रिय पाठ्यपुस्तकों में से एक है, जबकि कक्षा XI-XII में आधुनिक भारत और विश्व इतिहास के लिए कल्याणी प्रकाशन की पाठ्यपुस्तक सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाली पाठ्यपुस्तक है। कक्षा IX की पाठ्यपुस्तक जो प्राचीन और मध्ययुगीन भारतीय इतिहास से संबंधित है, में इन कालखंडों का विस्तृत कालानुक्रमिक इतिहास प्रस्तुत किया गया है। जैसा कि हम जानते हैं कि दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक का संबंध आधुनिक भारतीय इतिहास और विश्व इतिहास से है. यह पुस्तक भी इन कालखंडों के कालानुक्रमिक इतिहास को बहुत तथ्यात्मक विस्तार के साथ और मूर्तियों, इमारतों के विविध चित्रों के साथ प्रस्तुत करती है। अध्यायों के मुख्य बिंदु हैं, 'क्या आप जानते हैं' जो कुछ अतिरिक्त जानकारी प्रदान करते हैं, 'पता करें' जो कुछ और जानकारी प्राप्त करने के लिए कहते हैं, 'मुख्य शब्द' और 'अभ्यास' भी दिये गए हैं। जहाँ तक कक्षा XI-XII की पाठ्यपुस्तकों का सवाल है, ये अर्थव्यवस्था में विकास, औद्यो गीकरण, समाज का क्रांतिकारी चरित्र, विभिन्न विद्रोहों आदि पारंपरिक विषयों से संबंधित हैं। विश्व इतिहास का हिस्सा मुख्य रूप से संकट, परिवर्तन, राजनीतिक आंदोलनों, राजनीतिक प्रभुत्व, युद्ध, क्रांतियाँ आदि के बारे में बात करता है।।

इन पुस्तकों में अलग-अलग समय अवधि को इसके सभी पहलुओं जैसे- राजवंशों, शासकों, समाज, अर्थव्यवस्था, कला वास्तुकला और कई अन्य विवरणों के साथ प्रस्तुत किया गया है। विषय की शुरुआत करते समय साक्ष्यों का अक्सर शुरुआत में उल्लेख किया गया है। NCERT के विपरीत, ये पुस्तकें विषय वस्तु को पुरातात्विक अवशेषों के साथ प्रस्तुत करने की जगह पुरातत्व पर सामग्री अलग से प्रस्तुत करती हैं। CISCE पाठ्यपुस्तक की सामग्री पुराने पारंपरिक रूप में व्यवस्थित एक सामान्य कालानुक्रमिक इतिहास है जिसमे मुख्य बिंदुओं पर ज़ोर देते हुए ज़्यादातर जानकारियाँ बिन्दुवार ही दी गई हैं। इसे इन दोनों ही तरह की पाठ्यपुस्तकों में महाजनपदों पर दी गई सामग्री के उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। दोनों पाठ्यपुस्तकों में महाजनपदों पर सामग्री है, लेकिन NCERT पाठ्यपुस्तक में इस बात की चर्चा है कि महाजनपद कैसे अस्तित्व में आए और उनकी विशेषताएं क्या थीं CISCE पाठ्यपुस्तक सिर्फ विशिष्ट जनपदों, उनके शासकों और प्रशासन पर केंद्रित हैं। ब्रह्म समाज के भवन और कुछ अन्य भवनों का उल्लेख इन CISCE पुस्तकों में किया गया है लेकिन यहाँ उनका अध्ययन केवल उनकी स्थापना के इर्द गिर्द ही सीमित है। एनसीईआरटी की पाठ्यसामग्री निरंतर छात्रों के साथ संवाद करती है, बीच-बीच में सोचने पर मजबूर कर देने वाले प्रश्न उठाती है ताकि बच्चे रुककर विचार करें। साथ ही इनमे विभिन्न साक्ष्यों के साथ भी प्रश्न दिये गए हैं जो छात्रों को केवल एक समय विशेष के कुछ पुरातात्विक स्रोतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों को पुरातात्विक सामग्री की मदद से और सीखने व समझने के लिए प्रेरित करते हैं। कुछ प्रश्नों के उदाहरण इस तरह हैं जैसे कि राजा को सिक्कों में कैसे चित्रित किया गया है? मूर्तिकला में ऐसे कौन से तत्व हैं जो सुझाव देते हैं कि यह एक राजा की छवि है? इस तरह एन सी ई आर टी की पाठ्यपुस्तकों में सभी जगह विद्यार्थियों को पाठ्यसमग्री पर गहराई से सोचने और विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया है।

यूपी के पाठ्यक्रम के दस्तावेज़ में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि कोई भी पाठ्यपुस्तक बोर्ड द्वारा निर्धारित या सुझाई नहीं गई है और स्कूल प्राचार्य अपने विषय शिक्षक के परामर्श से पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यपुस्तक का चयन कर सकते हैं। यूपी में, सरकारी एजेंसी द्वारा कक्षा आठवीं तक की पाठ्यपुस्तकें तैयार की जाती हैं और कक्षा IX से विभिन्न प्रकाशनों की पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनमें से चयन करने के लिए विद्यालय स्वतंत्र हैं। ये पाठ्यपुस्तकें यूपी द्वारा तैयार पाठ्यक्रम के आधार पर लिखी गई हैं। यूपी के विभिन्न हिस्सों के शिक्षकों से बात के द्वारा यूपी के स्कूलों में 3 सबसे लोकप्रिय प्रकाशनों की पाठ्यपुस्तकों के उपयोग के बारे में पता चला। ये हैं राजलक्ष्मी प्रकाशन, विद्या प्रकाशन और हिंदी प्रचारक प्रकाशन है। इन सभी पाठ्यपुस्तकों की समान विशेषताएं हैं। ये किताबें मुख्य रूप से तथ्यात्मक विवरणों से भरी लंबे कालानुक्रमिक इतिहास को प्रस्तुत करती हैं, लेकिन ये विभिन्न पुरास्थलों से खुदाई में मिले पुरावशेषों, सिक्कों, शिलालेखों, मकबरों, मस्जिदों, किलों आदि पर भी विस्तृत जानकारी देती हैं। ये पुस्तकें विभिन्न राजवंशों के दौरान विभिन्न शासकों, अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज और प्रशासन पर विवरण प्रदान करती हैं। इसे पारंपरिक पाठ प्रस्तुत करने का तरीका माना जा सकता है, जिसको इसी रूप में संपूर्ण भारत की पुस्तकों में वर्षों से ऐसा ही दिया जाता रहा है। आधुनिक इतिहास से संबंधित पुस्तक में अलीगढ़ में प्राच्य महाविद्यालय, कोलकाता में हिंदू कॉलेज, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना/ समाज, सेलुलर जेल जैसी विभिन्न इमारतों का भी उल्लेख किया गया है, लेकिन वास्तुकला के दृष्टिकोण से इन पर चर्चा नहीं की गई है। इन पुस्तकों की एक महत्वपूर्ण विशेषता विभिन्न इतिहासकारों या पुरातत्वविदों के दृष्टिकोण या कथन हैं जो सभी अध्यायों में प्रदान किए गए हैं। इस बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है प्रत्येक पुस्तक के अंत में महत्वपूर्ण तिथियों, व्यक्तित्वों, मानचित्रों और ऐतिहासिक स्थानों पर दिये गए विभिन्न प्रकार के परिशिष्ट। ऐतिहासिक स्थानों पर दिये गए परिशिष्ट में ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की वर्तमान स्थिति और वहां से खुदाई में निकली सामग्री का विवरण दिया गया है। ऐसी प्रत्येक जगह के बारे में दिये गए इन संक्षिप्त लेखों से कला, वास्तुकला, मूर्तिकला और कभी-कभी इन स्थानों पर स्थित संग्रहालयों और उनके संग्रह के बारे में भी जानकारी मिलती है।

एनसीईआरटी की पुस्तकें भारत की कला और वास्तुकला पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करती हैं और इसके इतिहास के बारे में बताती हैं। विभिन्न अध्यायों में इस पहलू पर चर्चा करने के साथ-साथ इस भौतिक या मूर्त विरासत की चर्चा एक अलग अध्याय में भी की गई है। दूसरी ओर, अन्य पुस्तकों में इस तरह की सामग्री की चर्चा उस साम्राज्य

या शासक के शासन की चर्चा करते समय की गई है जिसके शासन के दौरान इसका निर्माण हुआ था। NCERT पुस्तक पुरासामग्री के संरक्षण में संलग्न विदेशी अधिकारियों और भारतीयों के प्रयासों को भी इंगित करती है। कलाकृतियों की खोज, उनके लंदन ले जाए जाने, एशियाटिक सोसाइटी पर चर्चा और ब्रिटिश पुरातत्वविदों के दृष्टिकोण NCERT पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण सामग्री हैं। मंदिरों के निर्माण में दक्षिण भारत, उत्तर भारत और पश्चिमी भारत में अपनाई गई विभिन्न वास्तुकला शैलियों पर बहुत सारे चित्रों और चर्चा के साथ प्रस्तुत किए गए कला और वास्तुकला के विभिन्न उदाहरण छात्रों को भारत की कलात्मक उत्कृष्टता का भान कराते हैं। एनसीईआरटी की सभी पाठ्यपुस्तकों में पुरातात्विक अवशेष, चाहे वे महलों, खंडहरों के रूप में हों या अन्य मूर्त प्रमाणों के रूप में, भारतीय इतिहास के सभी कालखंडों से जुड़ी इन सामग्रियों की चर्चा और चित्रण किया गया है। इसके अलावा, इसमें नक्शे भी हैं, विभिन्न शहरों के और विभिन्न इमारतों की योजनाएं और विभिन्न वास्तुशिल्प और मूर्तिकला नमूनों के रेखा चित्र हैं। इस तरह NCERT पाठ्यपुस्तकों में साहित्यिक और मौखिक परंपराओं, स्मारकों, शिलालेखों और अन्य अभिलेखों से मिलाजुलाकर प्रस्तुत की गई सामग्री छात्रों को इतिहास को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है।

प्रश्न/अभ्यास

जहाँ तक NCERT की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए प्रश्नों का प्रश्न है, अध्यायों में विभिन्न प्रकार के प्रश्न होते हैं जैसे लघु उत्तर, दीर्घ उत्तर, चित्र पर प्रश्न, मानचित्र कार्य, परियोजना कार्य जो छात्रों से संग्रहालयों या किसी ऐतिहासिक स्मारक या पुरास्थल पर जाने और उस पर एक रिपोर्ट तैयार करने की अपेक्षा करते हैं। ये प्रश्न तुलना, संक्षिप्तिकरण, सूचीबद्ध करने, संक्षिप्त लेखन, चर्चा, तर्क, व्याख्या, विश्लेषण और अन्वेषण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जिज्ञासु छात्रों को और अधिक जानने के लिए कुछ पुस्तकों के नाम और लिंक भी दिए गए हैं।

जहां तक CISCE पाठ्यपुस्तकों का सवाल है, कक्षा IX-X की पाठ्यपुस्तकों में संक्षिप्त उत्तर, संरचित प्रश्न और एक स्रोत आधारित प्रश्न होता है। इन पुस्तकों की एक दिलचस्प विशेषता स्रोत आधारित / चित्र अध्ययन प्रश्न है जहां 3-4 प्रश्नों के साथ एक छवि, कलाकृतियों, शिलालेख, सिक्का, मुहर या पेंटिंग की तस्वीर दी गई है। इसके अपने फायदे हैं क्योंकि यह छात्रों को इतिहास के अध्ययन के लिए उपयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के स्रोतों से परिचित कराता है और उन्हें इन स्रोतों का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित भी करता है। लेकिन एनसीईआरटी के विपरीत ये प्रश्न अधिकतर ज्ञान की जाँच करते हैं, जैसे एक अध्याय में उन्होंने छात्रों से एक मंदिर की तस्वीर का अध्ययन करने के लिए कहा है और फिर छात्रों से वास्तुशिल्प विशेषताओं का निरीक्षण करने और इसे पहचानने के लिए कहने के बजाय छात्रों से पूछा गया है - मंदिर कहाँ स्थित है, किसने इसका निर्माण किया, यह मंदिर किस देवता का है आदि. संरचित प्रश्नों में उन्होंने कुछ बिंदु दिए हैं जिन पर छात्रों से उत्तर अपेक्षित है। ये प्रश्न केवल तथ्यात्मक विवरण पर केंद्रित हैं और मुख्य रूप से ज्ञान आधारित हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लघु और दीर्घ उत्तरीय दोनों प्रश्न दिए गए हैं लेकिन ये केवल तथ्यात्मक विवरण पर आधारित हैं। अभ्यास प्रश्न सामान्यतया सूचना केंद्रित हैं। बहुत कम प्रश्न ही 'क्यों' और 'कैसे' पर ध्यान देते हैं।

यूपी की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए प्रश्न आम तौर पर तीन प्रकार के हैं: लघु उत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय, बहुविकल्पीय प्रश्न और कभी-कभी ऐतिहासिक स्थानों, मार्गों, हमले के स्थानों और साम्राज्य की सीमा के मानचित्रण पर एक प्रश्न किया गया है। अधिकांश प्रश्न ज्ञान आधारित हैं। बहुत कम प्रश्नों में ही विद्यार्थियों से मूल्यांकन, विश्लेषण की अपेक्षा की गई है. किसी भी प्रकाशन की पुस्तक में चित्र या अन्य प्रकार के स्रोतों पर प्रश्न नहीं हैं।

चित्र

छात्र की कल्पना को साकार करने में चित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहां तक एनसीईआरटी की किताबों का सवाल है, इन किताबों में दिए गए चित्र बहुत स्पष्ट, रंगीन और विस्तृत टिप्पणी के साथ हैं। चित्रों में सिक्का, मूर्तिकला, शिलालेख, मंदिर, मस्जिद और दरगाह, विभिन्न कला रूप, महल, इमारतें, शहरों का लेआउट, इमारतों की योजना, वास्तुकला और मूर्तिकला नमूनों के रेखा चित्र, नक्शे, कलाकृतियों और अन्य सामग्री के चित्र शामिल हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में उपकरण बनाने में शामिल प्रक्रियाओं और तकनीकों के चित्र भी हैं जो एक छात्र के लिए तत्कालीन समय की कल्पना करने में बहुत मदद करते हैं।

CISCE की कक्षा IX-X की पाठ्यपुस्तक में दिये गए चित्र छोटे हैं लेकिन काफी स्पष्ट और रंगीन हैं। हालांकि सभी नहीं, लेकिन कुछ चित्र छात्रों को चित्र के बारे में अधिक जानने के लिए कहते हैं। कक्षा XI-XII की पाठ्यपुस्तकों में बहुत कम चित्र हैं और वे भी विभिन्न व्यक्तित्वों और कुछ मानचित्रों के हैं। ये चित्र काले और सफेद रंग में हैं और बहुत अच्छी गुणवत्ता के नहीं हैं। इस स्तर की पाठ्यपुस्तकें विभिन्न घटनाओं और घटनाओं से संबंधित स्थानों का कोई चित्र प्रदान नहीं करती हैं।यूपी बोर्ड की सभी प्रकाशन पुस्तकों में बहुत कम चित्र दिए गए हैं और जो चित्र मौजूद हैं वे स्पष्ट और रंगीन नहीं हैं।

निष्कर्ष

तीन विद्यालयी बोर्डों के इतिहास पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा से पता चलता है कि पुरातात्विक अवशेषों की सामग्री और उनके कवरेज के संदर्भ में CISCE, UP और CBSE पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में व्यापक अंतर है। यह सही है कि गतिविधि आधारित शिक्षण और शैक्षिक यात्राएं यह सुनिश्चित करती हैं कि छात्र-छात्राएं

वास्तविक ऐतिहासिक ज्ञान प्राप्त करने और न केवल स्कूल में बल्कि बाहर के जीवन में उस ज्ञान और कौशल को लागू करने में सक्षम होंगे जिसे उन्होने विद्यालय में अर्जित किया है। लेकिन इन सबसे पहले यह सुनिश्चित करना ज़रूरी होगा कि छात्र-छात्राओं द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्यसामग्रियों में ऐसी पुरातात्विक सामग्रियों को यथास्थान और पर्याप्त रूप में दिया गया हो। इसके साथ ही पूरी विषय सामग्री को पुरातात्विक अवशेषों को साथ लेते हुए प्रस्तुत करने की आवश्यकता है न कि इन्हें अलग से प्रस्तुत करने की। इस तरह से प्रस्तुत सामग्री में छात्र-छात्राओं के साथ प्रश्नों के ज़रिये निरंतर संवाद करने की भी ज़रूरत है ताकि सभी विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक विरासत के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके। इस तरह से किए गए इतिहास-शिक्षण से विद्यार्थियों को सांस्कृतिक विरासत के प्रति अधिक जागरूक और संवेदनशील बनने में मदद मिलेगी और अंततः उन्हें इसे संरक्षित करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकेगा। एनसीईआरटी की इतिहास की पाठ्यपुस्तकें न केवल पुरातत्व पर सामग्री प्रदान करती हैं बल्कि पूरी सामग्री को पुरातात्विक सामग्री के साथ जोड़कर प्रस्तुत करती हैं और ऐसा वे विभिन्न तरह के चित्रों, प्रश्नों और गतिविधियों के ज़रिये करती हैं। इन सभी प्रयासों के माध्यम से ये पुस्तकें विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराने के साथ ही साथ उन्हें इनके संरक्षण के प्रति भी प्रेरित करती हैं।अन्य बोर्डों के इतिहास के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को इस दिशा में काफी बदलाव करने की आवश्यकता है। यहाँ हमारा उद्देश्य यह सुझाव देना नहीं है कि प्रत्येक बोर्ड को एनसीईआरटी / सीबीएसई पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का पालन करने की आवश्यकता है, लेकिन इतिहास के शिक्षण-प्रशिक्षण में दुनिया भर में आए बदलाव को देखते हुए जहाँ स्रोत आधारित शिक्षण और विभिन्न कौशलों की प्राप्ति को इतिहास शिक्षण के महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में कई वर्षों से माना जाता रहा है, को सभी स्कूल बोर्डों को चाहे वे निजी हों या राज्य के, अपने पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों पर गहराई से विचार करना चाहिए और छात्रों की ग्रेड स्तर क्षमताओं और इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस व्यापक अंतर को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों को पाठ्यक्रम में निर्धारित व्यापक उद्देश्यों का पालन करने की आवश्यकता है।

नोट

*सीबीएसई से संबद्ध विद्यालयों में प्रायः एनसीईआरटी द्वारा तैयार पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें प्रयोग में लाई जाती हैं अतः यहाँ तीन बोर्डों के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की तुलनात्मक समीक्षा के समय सुविधा की दृष्टि से पूरे लेख में एनसीईआरटी और सीबीएसई को एक दूसरे के बदले इस्तेमाल किया गया है।

**उत्तर प्रदेश बोर्ड ऑफ हाईस्कूल एंड इंटरमीडियट ने वर्तमान सत्र से अपने संबद्ध विद्यालयों में एनसीईआरटी द्वारा तैयार पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें प्रयोग में लाने का आदेश दिया है. यह अध्ययन 2017-18 में किया गया था जब वहाँ के विद्यालयों में व्यक्तिगत प्रकाशकों द्वारा तैयार पुस्तकें प्रयोग में लाई जाती थीं।

संदर्भ

1. Corbishley, M. (2011). *Pinning Down the Past: Archaeology, Heritage, and Education Today* (Vol. 5). Boydell & Brewer Ltd.
2. Dahiya, N. (2003). 20 A case for archaeology informal school curricula in India. In *The Presented Past: Heritage, Museums and Education* (p. 299). Routledge.
3. Daniels, R. (1981). *Studying History: How and Why.* Englewood Cliffs, NJ: Prentice-Hall.
4. Derbish, Mary (2003) *That's How You Find Out How Real Archaeologists Work-When You Do It Yourself.* Unpublished Masters Thesis, College of William and Mary, Williamsburg.
5. Fedorak, S. A. (1994). Is archaeology relevant? An examination of the roles of archaeology in education (Doctoral dissertation).
6. Glendinning, M. (2005). Digging into history: Authentic learning through archeology. *The History Teacher*, *38* (2), 209-223.
7. Henson, D., Bodley, A., & Heyworth, M. (2006). The Educational Value of Archaeology. *Archaeology and education: from primary school to university*, *1505*, 35.
8. Levstik, Linda S., A. Gwynn Henderson, and Jennifer S. Schlarb (2003) *Digging for Clues: An Archaeological Exploration of Historical Cognition.* Unpublished paper presented at the Fifth World Archaeological Congress, Washington.
9. Moe, Jeanne M., Carolee Coleman, Kristie Fink, and Kirsti Krejs (2002) Archaeology, Ethics, and Character: Using Our Cultural Heritage to Teach Citizenship. *The Social Studies* 93(3): 109-112.
10. National Council of Educational Research & Training (2004) *Rational and Empirical Evaluation of NCERT*

Textbooks (Languages, Social Sciences and Commerce), Unpublished Report, Author, New Delhi.

11. National Council of Educational Research & Training (2005) *National Curriculum Framework.* Author, New Delhi.
12. National Council of Educational Research & Training (2006) *Syllabus for classes at the elementary level*. Author, New Delhi
13. Raina, V.K. 1992, The Realities of Teaching History, National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
14. Ramos, Maria, and David Duganne (2000) *Exploring Public Perceptions and Attitudes about Archaeology.* SAA Press, Washington.
15. Society for American Archaeology (1995) *Guidelines for the Evaluation of Archaeology Education Materials.* Public Education Committee, Formal Education Subcommittee. Bureau of Reclamation, Denver.
16. Voss, J. F. (1998). Issues in the learning of history. *Issues in Education, 4(2),* 163-210.
17. माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश (2016).बोर्ड ऑफ हाईस्कूल एंड इंटरमीडियट. कक्षा 11. विवरण पत्रिका.लेखक. इलाहाबाद.
18. माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश (2017).बोर्ड ऑफ हाईस्कूल एंड इंटरमीडियट. कक्षा 12. विवरण पत्रिका.लेखक. इलाहाबाद.
19. Council for the Indian School Certificate Examinations. *Syllabus for class IX-X*. Author, New Delhi. Available at *https://www.icsesyllabus.in*
20. Council for the Indian School Certificate Examinations. *Syllabus for class IX-X*. Author, New Delhi. Available at *https://www.icsesyllabus.in*